

राजा का राज़

एक संताली लोक कथा

एक राजा था, जिसका बैल के कान वाला एक बेटा था। राजा को उसपर बहुत शर्म आती थी और वह राजकुमार को महल के एक गुप्त कमरे में छिपा कर रखता था। जल्द ही राजकुमार के मुंडन संस्कार का समय आया। राजा ने शाही नाई को बुलवा कर गुप्त रूप से विधि सम्पन्न करवा दी।

कार्यक्रम के समाप्त होने के पश्चात् राजा ने नाई को अपने कमरे में बुलवाया और उसे चेतावनी दी। “कभी भी किसी को भी राजकुमार के कान के बारे में नहीं बतलाना। अगर तुमने ऐसा किया तो मैं तुम्हें काल कोठरी में फिकवा दूँगा।” नाई ने वादा किया कि वह इसके बारे में किसी से एक शब्द भी नहीं कहेगा। लेकिन उसके पेट में कोई भी राज़ टिकता न था।

दिन गुज़रते गए और उसका पेट फूलने लगा। “मुझे किसी को बताना ही होगा नहीं तो मेरा पेट फट जाएगा!” नाई ने सोचा। तभी उसके दिमाग में एक शानदार विचार कौंधा। वह एक पुराने पेड़ के पास गया और जल्दी से उसने वह रहस्य पेड़ के कान में फुसफुसा दिया। तुरंत ही उसे राहत महसूस होने लगी और उसका पेट अपने सामान्य आकार में आ गया। “यह पेड़ राजा के इस राज़ को ज़रूर गुप्त रखेगा,” नाई ने अपने-आप से कहा।

कुछ दिनों के बाद एक ढोलकिया एक नई ढोलक बनाने के लिए अच्छी लकड़ी की तलाश में वहाँ आया। वह ठीक उसी पेड़ के सामने आकर खड़ा हो गया जिसे उस नाई ने अपना राज़ बताया था। “यह ठीक वैसा ही है जिसकी तलाश में मैं था!” उसने मन में सोचा। उसने जल्द ही अपने लिए एक नयी ढोलक बना ली और महल में राजा के सामने गाने के लिए गया।



सन्तरी उसे देख कर खुश हुआ। “राजा को खुश करने के लिए कुछ गाओ, आज वे गुस्से में हैं।” रक्षक ने कहा। अचानक ढोलक अपने-आप ही गाने लगी। “मेरे पास एक राज़ है जिसे किसी के भी कानों में नहीं पड़ना चाहिये। राजा के बेटे के बैल के कान हैं।” सन्तरी ने जल्दी से ढोलक छीन ली और ढोलकिया पर चिल्लाते हुए बोला, “कोई राजा के रहस्य नहीं उगल सकता! कोई तुम्हें पकड़ ले इससे पहले तुम भाग जाओ।” मगर तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

राजा ढोलकिया का गाना सुन चुका था और ढोलकिये को अन्दर लाने का आदेश दे चुका था। बेचारे को घसीट कर दरबार में लाया गया। “इसे काल-कोठरी में फेंक दो!” राजा गरजा। “मगर यह नहीं, वह तो इसकी ढोलक थी महाराज।” सन्तरी ने कहा। “तो इस ढोलक को भी काल-कोठरी में फेंक दो और उन सब को सज़ा दो जिन्होंने मेरा राज़ सुन लिया है।” राजा गुर्गया। वह इतना ज़्यादा गुस्से में था कि उसकी मूँछ हिलने लगी। सन्तरी साहस के साथ आगे बढ़ा। “हे राजन्, तब तो यह बेहतर होगा कि आप अपने पूरे साम्राज्य को ही काल-कोठरी में फेंक दें। क्योंकि हम सब को आपका राज़ पता चल गया है।” राजा अवाक् रह गया। उसने अपने सबसे विश्वसनीय मंत्री की ओर देखा, “क्या यह सच है?” उसने पूछा। “जी हाँ, महाराज। हमने कभी कुछ इस वजह से नहीं कहा क्योंकि हम आपको दुःखी नहीं करना चाहते थे।” उसने कहा।

राजा को शर्मिन्दगी महसूस हुई। इतनी बड़ी सच्चाई को कभी भी छिपा कर रखा नहीं जा सकता है। उसे एहसास हुआ कि वह कितना क्रूर पिता था कि उसने अपने बेटे को इतने सालों तक छिपा कर रखा।

अगले दिन राजा ने छुट्टी की घोषणा कर दी। उसने एक विशेष जुलूस का आयोजन किया और बड़े गर्व के साथ अपने बेटे को सारे राज्य में घुमाया। बैल के कान होने के बावजूद सभी ने युवा राजकुमार का हाथ हिला-हिला कर जयजयकार किया। जुलूस के आगे-आगे था सन्तरी और उसके पीछे ढोलकिया बजा रहा था।

समाप्त



© BookBox. All Rights Reserved.
www.bookbox.com

Click below to follow us:



YouTube

facebook